अपूर्णीय क्षति

नहीं रही सुरों की आशा संगीत की दुनिया हुई सूनी

भारतीय सिनेमा के स्वर्णिम इतिहास में एक ऐसी आवाज , जिसने हर भावना को सुरों में ढालकर अमर बना दिया—जब यह पीड़ादायक खबर आई कि आशा भोंसलें अब हमारे बीच नहीं रहीं, तो संगीत की पूरी दुनिया ही शोक में डूब गई । वह आवाज, जो कभी मस्ती में झूमती थी, कभी प्रेम में भीगती थी और कभी दर्द की गहराइयों को छू जाती थी—आज सदा के लिए खामोश हो गई है। यह केवल एक महान गायिका का जाना नहीं, बल्कि एक युग का अंत है, एक ऐसी विरासत का विराम है जिसे शब्दों में बांधना कठिन है।

आशा ताई ने अपने सुरों से जीवन के हर रंग को जिया। 'पिया तू अब तो आजा' की चुलबुलाहट हो या 'चुरा लिया है तुमने' की मधुरता–हर गीत में उनकी आत्मा बसती थी। उनके गीत केवल संगीत नहीं थे, बल्कि भावनाओं का वह संसार थे जिसमें हर श्रोता खुद को खो देता था। उनकी जीवन यात्रा संघर्षों से भरी रही। कम उम्र में ही जीवन की कठिनाइयों का सामना करते हुए, उन्होंने अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर एक अलग पहचान बनाई। लता मंगेशकर जैसी महान गायिका की बहन होते हुए भी उन्होंने अपनी राह खुद बनाई और अपनी विशिष्टता को साबित किया। आशा ताई की आवाज की सबसे बड़ी खासियत उसकी विविधता थी। ग़ज़ल, भजन, पॉप, कैबरे–हर शैली में उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी। संगीतकार आर .डी . बर्मन के साथ उनकी जुगलबंदी ने भारतीय संगीत को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाया और अनगिनत कालजयी गीत दिए। आज उनके न रहने की खबर केवल एक सूचना नहीं, बल्कि करोड़ों दिलों की धड़कनों में उठती एक गहरी पीड़ा है। ऐसा लगता है जैसे संगीत की आत्मा ही कहीं खो गई हो, जैसे हर सुर में अब एक खालीपन सा बस गया हो। लेकिन सच्चाई यह भी है कि कुछ आवाजें कभी नहीं मरतीं। आशा ताई की आवाज भी उन्हीं अमर सुरों में से एक है, जो हर युग में, हर दिल में जीवित रहती हैं। उनके गीत सदैव गूंजते रहेंगे, उनकी यादें हमेशा हमें भावुक करती रहेंगी। आज भले ही वह हमारे बीच नहीं रहीं, लेकिन उनका संगीत, उनका योगदान और उनका जादू हमेशा जीवित रहेगा। वह केवल एक गायिका नहीं थीं–वह सुरों की वह आशा थीं, जिसने संगीत को जीवन दिया।

सत्य भूषण शर्मा
प्रवक्ता,पत्रकार, लेखक एवं कवि
उदयपुर, राजस्थान मो .9414934304

श्रद्धांजलि

आशा भोंसले,12 अप्रैल, 2026

मेरी आवाज़ ही मेरी पहचान है...

भारतीय संगीत के फलक पर सात दशकों तक अपनी आवाज़ की जादूगरी बिखेरने वाली सुरों की मलिका, आशा भोंसले (आशा ताई) का आज 92 वर्ष की आयु में महाप्रयाण हो गया। मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में उनके अंतिम सांस लेने के साथ ही भारतीय पार्श्व गायन के उस स्वर्ण युग का एक बड़ा अध्याय समाप्त हो गया, जिसने पीढ़ियों को गुनगुनाना सिखाया। उनका निधन केवल एक महान कलाकार की विदाई नहीं है, बल्कि उस अदम्य जिजीविषा और प्रयोगधर्मी साहस का विराम है, जिसने संगीत को नई परिभाषाएँ दीं।

आशा जी की जीवन यात्रा संघर्ष और स्वाभिमान की मिसाल रही है। एक ऐसे समय में जब 'सुर कोकिला' लता मंगेशकर का प्रभाव शिखर पर था, आशा भोंसले ने अपनी एक नितांत मौलिक और स्वतंत्र पहचान गढ़ी। उन्होंने कभी भी खुद को किसी की परछाई नहीं बनने दिया। शुरुआती दौर में उन्हें वे गीत मिले जो दूसरों द्वारा ठुकरा दिए गए थे, लेकिन अपनी मेहनत और आवाज़ से उन्होंने साबित किया कि वह हर भाव को स्वर देने में सक्षम हैं। शास्त्रीय नज़ाकत वाली ग़ज़लों से लेकर कैबरे की थिरकन और लोक धुनों की सोंधी महक तक, उनकी आवाज़ ने हर शैली को अपना बना लिया।

आशा ताई की उपलब्धियाँ भारतीय संगीत की वह अनमोल धरोहर हैं, जिसे काल के बंधनों में नहीं बांधा जा सकता। 12,000 से अधिक गीतों को स्वर देने का उनका गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड उनकी अटूट सक्रियता का प्रमाण है। उन्हें दादा साहब फाल्के और पद्म विभूषण जैसे शीर्ष सम्मानों से नवाज़ा गया, आर.डी. बर्मन (पंचम दा) के साथ उनकी सांगीतिक जुगलबंदी ने 'दम मारो दम' और 'चुरा लिया है' जैसे कालजयी गीत दिए, जो आज भी संगीत प्रेमियों की धड़कन बने हुए हैं। वो संवेदना और जीवंतता का संगम थीं,

संगीत के साथ-साथ आशा जी का व्यक्तित्व भी अत्यंत जीवंत और प्रेरक था। जीवन के व्यक्तिगत दुखों और उतार-चढ़ाव के बावजूद उनकी खनकती आवाज़ और चेहरे की मुस्कान कभी फ़ीकी नहीं पड़ी। उन्होंने अपनी गायकी में सूक्ष्म बारीकियों का ऐसा संसार रचा कि 'इन आँखों की मस्ती के' जैसी ग़ज़लें सुनकर रूह झूम उठती है। वे केवल एक गायिका नहीं, बल्कि एक चलती-फिरती संस्था थीं, जिन्होंने भाषा और भूगोल की सीमाओं को लांघकर दुनिया भर में भारतीय संस्कृति का परचम फ़हराया।

आज भले ही वह भौतिक रूप से हमारे बीच मौजूद नहीं हैं, परंतु उनकी विरासत एक ऐसी अक्षय निधि की तरह हमारे पास सुरक्षित है, जो आने वाली कई शताब्दियों तक संगीत के साधकों का मार्गदर्शन करती रहेगी। 13 अप्रैल होने वाला उनका अंतिम संस्कार एक देह का अंत हो सकता है, लेकिन उनकी 'मखमली आवाज़' फिज़ाओं में हमेशा के लिए अमर हो चुकी है।जैसा कि अक्सर उनके चाहने वाले कहते हैं, 'सूरज ढल सकता है, लेकिन उसकी रोशनी रह जाती है। 'आशा ताई की आवाज़ वह शाश्वत रोशनी है जो संगीत की दुनिया को हमेशा आलोकित करती रहेगी।

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा मध्य प्रदेश

भारतीय लोकतंत्र और नीति निर्धारण में

बढ़े महिलाओं की सक्रिय भागीदारी

पटना संवाददाता विनोद प्रसाद, । इग्नू रीजनल सेंटर, पटना एवं इग्नू स्टडी सेंटर, टी.पी.एस. कॉलेज, पटना के संयुक्त तत्वाधान में आज नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 के अंतर्गत 'Social and Cultural Barriers for Under-representation of Women in Policy Making and Legislatures' विषय पर एक पैनल चर्चा का आयोजन प्रधानाचार्य प्रोफेसर (डॉ.) तपन कुमार शांडिल्य के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रोफेसर उषा विद्यार्थी, प्रिंसिपल, महिला कॉलेज, खगौल, पूर्व विधायक एवं पूर्व सदस्या, बिहार महिला आयोग ने अपने विचारोत्तेजक व्याख्यान में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023' पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह अधिनियम भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस अधिनियम के माध्यम से संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को आरक्षण प्रदान कर उन्हें नीति-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर मिलेगा। कार्यक्रम के अध्यक्ष, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, पटना के वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कृष्णा राव ईशरला ने अपने संबोधन में कहा कि महिला सशक्तिकरण समग्र सामाजिक विकास का आधार है। स्वागत भाषण एवं विषय प्रवेश इग्नू अध्ययन केंद्र, टी.पी.एस. कॉलेज, पटना के प्रभारी समन्वयक डॉ. प्रशांत कुमार द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने विषय की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को रेखांकित किया। इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, पटना की सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. नीलू शर्मा ने महिला सशक्तिकरण में शिक्षा एवं जागरूकता की भूमिका पर प्रकाश डाला। टी.पी.एस. कॉलेज, पटना के राजनीति विज्ञान विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. नूतन कुमारी ने विषय के राजनीतिक एवं नीतिगत आयामों पर विस्तृत चर्चा करते हुए महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने हेतु नीतिगत सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों एवं विद्यार्थियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। विद्यार्थियों के प्रश्नों का विशेषज्ञों द्वारा दिए गए संतोषजनक उत्तर से चर्चा और अधिक समृद्ध एवं संवादपरक बनी। कार्यक्रम का संचालन वनस्पति विज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. विनय भूषण द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन इग्नू अध्ययन केंद्र, टी.पी.एस. कॉलेज, पटना के सहायक समन्वयक डॉ. नीरज रंजन द्वारा किया गया।

इस अवसर पर डॉ. आसिफ इकबाल, सहायक क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, पटना तथा डॉ. सुशोभन पलाधी एवं डॉ. संजय कुमार, सहायक समन्वयक, इग्नू अध्ययन केंद्र, टी.पी.एस. कॉलेज, पटना की विशिष्ट उपस्थिति रही। साथ ही प्रो. ज्योत्सना कुमारी (विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग), डॉ. शशि प्रभा दुबे, डॉ. मुकुंद कुमार, डॉ. नूपुर, डॉ. हंस कुमार, डॉ. उमेश कुमार, डॉ. रवि प्रभाकर, डॉ. बिनोद चौधरी, डॉ. सत्यजीत, डॉ. सत्येंद्र शर्मा, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. नागेन्द्र राय, शोधार्थी अंकित कुमार एवं शिवम पराशर, इग्नू सहायक चंदन कुमार, सुधीर शर्मा, सौरभ, ऋत्विक सहित इग्नू अध्ययन केंद्र के अनेक छात्र-छात्राओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कर्म कभी नहीं छोड़ते यह अटल सत्य

कर्म कभी नहीं छोड़ते, यह एक अटल सत्य है। अच्छे कर्म कीजिये, यही साथ जायेंगे। जीवन व्यर्थ मत गवाएं, मानव जीवन एक बार ही मिलता है। अच्छे कर्म युगों युगों तक अमर कर देते हैं। जीवन में कर्म का बहुत बड़ा महत्व है।

हमारे अच्छे और बुरे कर्म हमारे भविष्य को निर्धारित करते हैं। अच्छे कर्म करने से हम न केवल दूसरों का भला करते हैं, बल्कि अपने जीवन को भी सार्थक बनाते हैं। अच्छे कर्म करने से हमें मानसिक शांति मिलती है और हम अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं। बुरे कर्म छोड़ दीजिये, क्योंकि वे हमें कभी भी सुख नहीं दे सकते। बुरे कर्म करने से हम अपने जीवन को अंधकार में ले जाते हैं और दूसरों को भी दुख देते हैं। बुरे कर्मों के कारण हमें अपने जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है और हम अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं।

आइए, हम अच्छे कर्म करने का प्रयास करें और जीवन को सार्थक बनाएं। हमें अपने जीवन में सकारात्मकता को अपनाना चाहिए और दूसरों की मदद करनी चाहिए। हमें अपने परिवार, समाज और देश के लिए कुछ करना चाहिए। हमें अपने जीवन को दूसरों के लिए जीना चाहिए और उनके जीवन में खुशियां लानी चाहिए।

कर्म की शक्ति को समझें और अपने जीवन को बनाएं। हमें अपने कर्मों को अच्छे से अच्छे बनाने का प्रयास करना चाहिए। हमें अपने जीवन में अच्छे कर्मों को अपनाना चाहिए और बुरे कर्मों को छोड़ देना चाहिए। कर्म दो प्रकार के होते हैं - अच्छे कर्म और बुरे कर्म।

अच्छे कर्म वे होते हैं जो दूसरों का भला करते हैं और बुरे कर्म वे होते हैं जो दूसरों को दुख देते हैं। हमें अपने जीवन में अच्छे कर्मों को अपनाना चाहिए और बुरे कर्मों को छोड़ देना चाहिए। कर्म का महत्व हमारे जीवन में बहुत बड़ा है। कर्म हमारे भविष्य को निर्धारित करते हैं और हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करते हैं। अच्छे कर्म करने से हमें मानसिक शांति मिलती है और हम अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं।कर्म की शक्ति का उपयोग हम अपने जीवन में अच्छे से अच्छे करने के लिए कर सकते हैं।

हमें अपने जीवन में सकारात्मकता को अपनाना चाहिए और दूसरों की मदद करनी चाहिए। हमें अपने परिवार, समाज और देश के लिए कुछ करना चाहिए।कर्म की शक्ति को समझें और अपने जीवन को बनाएं। हमें अपने कर्मों को अच्छे से अच्छे बनाने का प्रयास करना चाहिए। हमें अपने जीवन में अच्छे कर्मों को अपनाना चाहिए और बुरे कर्मों को छोड़ देना चाहिए। आइए, हम अच्छे कर्म करने का प्रयास करें और जीवन को सार्थक बनाएं।

नरेंद्र भारती वरिष्ठ पत्रकार

खरड़ अलीपुर आश्रम में संस्कृत भारती हरियाणा की प्रांत समीक्षा योजना गोष्ठी का समापन

संस्कृति और संस्कार के संरक्षण के लिए संस्कृत को जन-जन तक पहुंचाया जाना जरूरी : राजदास महाराज

खरड़ अलीपुर स्थित स्वामी दीप्तानंद अवधूत आश्रम में जारी संस्कृत भारती की प्रांत समीक्षा योजना गोष्ठी का आज प्रदेश के जन-जन तक संस्कृत को पहुंचाने के आह्वान के साथ समापन हो गया। समापन कार्यक्रम में भागवत भूषण स्वामी राजदास जी महाराज मुख्यातिथि के रूप में शामिल हुए। अध्यक्षता आश्रम के महंत स्वामी जितेन्द्रानंद जी महाराज ने की।

मुख्य वक्ता संस्कृत भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री जयप्रकाश रहे। इस अवसर पर स्वामी राजदास जी महाराज ने कहा कि विदेशी आक्रांताओं ने संस्कृत और संस्कृति को बहुत नुकसान पहुंचाया। संस्कृत भारत की आत्मा रही है, इसे इसके पुरातन गौरव लौटाने में संस्कृत भारती के प्रयास सराहनीय है। संस्कृत पठन- पाठन की भाषा बने इसके लिए हम सबको शुरुआत अपने घर से करनी होगी। देश की संस्कृति और संस्कार को बचाए रखना है तो संरक्षण सबसे पहले करना होगा।

अखिल भारतीय संगठन मंत्री जयप्रकाश ने कहा कि आज हमें संस्कृत के प्रति देश में स्थापित किए हुए विमर्श को समाप्त किए जाने की आवश्यकता है। संस्कृत कठिन भाषा है, संस्कृत अशुद्ध बोले तो पाप लगेगा, संस्कृत वर्ग विशेष की भाषा है आदि आदि। इन विमर्शों का उद्देश्य यही रहा कि लोग संस्कृत से दूर रहें। संस्कृत भारती का पहला कार्य ही इस तरह के विमर्श को समाप्त कर लोगों के मुख में संस्कृत का प्रवाह करना है। उन्होंने बताया कि छह वर्ष बाद संस्कृत भारती की स्वर्ण जयंती है। इसको लेकर अभी से लक्ष्य बड़े रखने शुरू करने होंगे। इसके लिए प्रत्येक कार्यकर्ता आज से ही जुट जाएं। इस अवसर पर उत्तर क्षेत्र गीता शिक्षण केंद्र प ,मुख डॉ जोगेंद्र ,प्रांत सह मंत्री भूपेंद्र कुमार, ईशम सिंह, प्रांत कोष प्रमुख डॉ सुरेश, प्रचार प्रमुख सतेंद्र कुमार, गीता शिक्षण केंद्र प्रमुख जयपाल शास्त्री,हिसार विभाग संयोजक डॉ. शैलेंद्र, सह संयोजक सुशील शास्त्री, फरीदाबाद से राजेश कुमार, रामदेव कुरुक्षेत्र सह विभाग संयोजक, देवांश अंबाला विभाग संगठन मंत्री, प्रवेश कुमार गुरुग्राम विभाग संयोजक, विद्वत परिषद सदस्य डॉ जितेंद्र, जिला मंत्री राजकुमार शास्त्री, दिलीप मिरका, प्रचारक प्रदीप शास्त्री, आचार्य सुनील प्राचार्य गुरुकुल मताना, सुनीता प्राचार्य घिराय गुरुकुल, तावडू संयोजिका अनुष्का,वजीर सिंह, बलवंत सोनी पाबड़ा सुनील मताना आदि मौजूद रहे।

सुशील कुमार ' नवीन '
हिसार, 9671726237

सामाजिक आलेख

वरिष्ठजन और सामाजिक जुड़ाव

हमारा भारत देश सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक आदि का अद्वितीय संगम है. हम अपनी विरासत को अक्षुण रखते हुए नई पीढ़ियों हस्तातंरित कर रहे हैं. वरिष्ठजन, अति सम्मानीय नाम. अकूत ज्ञान, कौशल व अनुभवों के भंडार होते हैं. ये परिवार, समाज और देश के मध्य अति महत्वपूर्ण व मजबूत कड़ी होते हैं. ये नई दिशा देने में सक्षम हैं. समाज, समुदाय का वृहत्तर स्वरूप. मानव, समाज का एक अदद हिस्सा या कलपुर्जा नहीं बल्कि सक्रिय सहभागी सदस्य होता है. मानव बिना न तो समाज है और समाज बिना न ही मानव का अस्तित्व.

हमारा बीकानेर विश्व प्रसिद्ध शहर. अपने स्वादिष्ट भुजियों एवं मुँह बोलती नक्काशी वाली हवेलियों के लिये पहचाना जाता है. शहर की एक और प्रसिद्ध बात है... पाटा संस्कृति. पाटा संस्कृति हमारी अनूठी विरासत... यहाँ प्रौढ़ व बुजुर्ग बैठकर विशेष चर्चाओं में व्यस्त रहते हैं. ग्रामीण क्षेत्रों में घर के आगे चौकी बनी होती है जिस पर बुजुर्ग, युवा आदि बैठकर बतियाते रहते हैं. रात के समय वरिष्ठजन मंदिर या इन चौकी पर बैठ कर भजन वाणी करते रहते हैं. इन्हें सुनकर हम आनंदित अवश्य होते हैं. आप में से कई वरिष्ठजन इसका सुखद अनुभव रखते होंगे. आधुनिक भारत में शिक्षा ने रोजगार, कौशल, समृद्धि आदि दी हैं. वहीं संयुक्त परिवार में धीरे-धीरे आघात भी लगाया है. इस बिखराव के लिये हम सभी हैं जिम्मेदार. आधुनिक युग की तकनीक ने टीवी के दौर में आधे किंवाड़ बंद करा दिए थे. परन्तु अब? स्मार्ट फोन ने घर के दरवाज़े ही बंद करा दिए हैं. घर के सभी सदस्य अपने-अपने स्मार्ट फोन में कैद से हो गए हैं. किसी को परस्पर संवाद का समय नहीं मिल रहा है. संवादहीनता हमें एकाकीपन में धकेलता हैं. अब तो कोई मिलने वाला दस बार सोच कर नॉक करता है. न ही मिलने के लिये जाते हैं और न ही मिलने के लिये आते हैं. सोशल मीडिया ने धमाचौकड़ी मचा रखी हैं. देश विदेश के हजारों लाखों फॉलोवर्स फ्रेंड्स परन्तु आसपास कोई बोलचाल ही नहीं. इस सोशल मीडिया ने सोशल डिस्टेंस बढ़ा दी है. हमारी अपनत्व की बची खुची संस्कृति पुराने मोहल्लों में मृतप्राय हो रही है. कॉलोनियाँ? यह सबसे ज्यादा ग्रस्तित हो गई. एक ही दीवार पड़ोसी अब दो-चार महीने में दूर से मुश्किल से ही नज़र मिलाने का ख्याल रखते हैं. कौन क्या है और कहाँ आता जाता है, कोई मतलब नहीं?

समाज से जुड़ाव हर किसी के लिये जरूरी होता है. समाज के बिना सामाजिकरण के भाव विकसित नहीं हो सकते. सामाजिकरण से ही व्यक्ति में सुरक्षा, सहयोग, स्नेह आदि के मानवीय मूल्य विकसित होते हैं. इन्हीं से नैतिकता भी. मनोविज्ञान में हर व्यक्ति के व्यक्तित्व के आयाम भिन्न-भिन्न होते हैं. मनोविज्ञान के अनुसार दो प्रकार के व्यक्तित्व - अंतर्मूखी और बहिर्मूखी. कुछ लोग भीड़ में भी आनंद लेते हैं तो अधिकांश घबराते हैं. कुछ लोग अपनी रूचि के अनुसार छोटे मित्र-समूह यानी पीयर-ग्रुप में या इन्हें बना कर सहभागी बनते हैं. स्कूल, कॉलेज, समाज व ऑफिस में यह प्रक्रिया देखी जा सकती है. यह अपने आप में विश्लेषण करने का विषय है कि वह किस श्रेणी में फिट है? हम व्यक्तित्व विश्लेषण तसल्ली से करेंगे. हम इन बातों पर भी समुचित गौर करें कि हम इन पर किस स्तर तक चिंतन और ध्यान रखते हैं. ये आयाम हमारे सामाजिक जुड़ाव के महत्वपूर्ण स्तम्भ होते हैं.

- स्वास्थ्य - आहार, भ्रमण, जाँच, योग, वित्तीय-समय प्रबंधन
- परिवार - बेटे बेटी बच्चे,संयुक्त से एकल व शिक्षा-रोजगार
- गली - मोहल्ला : कॉलोनी, पाटा संस्कृति व कैंपस
- शहर से जुड़ी संस्थाएं, जन सेवाएं,आध्यात्मिक व संस्कृति
- एनजीओ - सामाजिक, स्वास्थ्य, पर्यावरण व संस्कृति
- सृजन - लेखन, चित्रकारी, अदाकारी व वाद्य
- ऐसे ही अन्य वैयक्तिक व सामाजिक आयाम आदि

मोहनलाल जाँगिड़,
सेवानिवृत आर ई एस, बीकानेर

महावीर सर्किल मोहल्ले में लगाए परिण्डे, अभियान में लगेंगे 2000 परिण्डे

बाड़मेर (राजस्थान) जन कल्याण संस्थान, बाड़मेर की ओर से भीषण गर्मी को देखते हुए अलग-अलग स्थानों पर मिट्टी के परिण्डे लगाएं जा रहे है। जिस कड़ी में रविवार को महावीर सर्किल मोहल्ले में मुकेश बोहरा अमन की अगुवाई में पंछियों की जल सेवा में पेड़ों व घरों की छतों पर परिण्डे लगाए गए। मुकेश बोहरा अमन ने कहा कि गर्मी के इस दौर में अबोल पशु-पक्षियों की सेवा पुण्य का कार्य है। जीवों के प्रति करुणा से ही सही मायनों में धर्म व मानवता की स्थापना हो सकेगी। अमन ने कहा कि संस्थान इस वर्ष आमजन के सहयोग से तकरीबन 2000 से अधिक मिट्टी के परिण्डे लगायेगी। इस दौरान मुकेश अमन, राजेन्द्र भंसाली, राजू जैन, सुरेश कुमार जैन सहित मोहल्लेवासी उपस्थित रहे।

मुकेश अमन,
बाड़मेर, 8104123345

संविधान के शिल्पकार को नमन - अंबेडकर जयंती विशेष

देश के महान सपूत, महापुरुष, महामानव, जननायक, देश के अनमोल रत्न तथा भारत रत्न डाक्टर भीमराव अम्बेडकर जी का जन्म 14 अप्रैल को मध्यप्रदेश के महु में हुआ था! वे पिता राम जी सकपाल और माता भीमाबाई की संतान थे! पिता सेना में सूबेदार थे तथा माता धार्मिक विचारों की थी! प्राथमिक शिक्षा देश में लेने के पश्चात उच्च शिक्षा के लिए विदेश गए।

विधी में उपाधि प्राप्त करने के बाद वापस भारत आ गए! मद्यपान और छुआछूत के खिलाफ अनेक आंदोलन किए! वो शुद्ध आचरण और सात्विक विचारों के थे! उन्होंने नशा खोरी, असमानता, ऊंच नीच, छुआछूत तथा जाति पांत का हमेशा विरोध किया! वो प्रख्यात विधीवेत्ता के साथ साथ भारत माता के सच्चे सपूत थे! वे आजादी के बाद देश के

पहले विधी मंत्री बने! दुनिया के सबसे बड़े लिखित भारत के संविधान के निर्माता . रचयिता और शिल्प कार बने! उनके बनाए संविधान के आधार पर ही आज हमारे देश का नाम दुनिया में सर्वोच्च शिखर पर है! भारत जैसे विशाल देश, अनेक धर्मों के मानने वाले लोग और अनेकता में एकता की विशेषता तथा सभी को साथ लेकर चलने वाले सवा सौ करोड़ लोगों को आज भी इसी संविधान के साथ रहना और जीवन यापन करना होता है! सभी के साथ इस संविधान के अंतर्गत ही बिना किसी भेदभाव के व्यवहार किया और संविधान के कानून के अनुसार पालन करना और रहना होता है! 6 दिसंबर 1956 में उनका देहावसान हो गया था, उन्हें चाहने वाले प्यार से उन्हें *बाबा साहब*कहते हैं! जन्म दिवस पर आम्बेडकर जी को शत् शत् नमन और आदरांजली!! जय भीम !! 14 अप्रेल जयंती पर सभी को बहुत बहुत बधाईयां और शुभकामनाएं।

संजय जांगजुड़े संजू,
बालाघाट 9993676194